प्रथम अध्याय

अमरकान्त का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रथम अध्याय

अमरकान्त का व्यक्तित्व और कृतित्व

(क) अमरकान्त का व्यक्तित्व :–

1. जन्म–

उत्तर प्रदेश के सबसे पूर्वी जिले बलिया में एक तहसील है–'रसडा'। इस रसड़ा तहसील के सुपरिचित गाँव 'नगरा' से सटा हुआ एक छोटा सा गाँव और है। यह गाँव है – 'भगमलपुर'। देखने में यह गाँव नगरा गाँव का टोला लगता है।

भगमलपुर गाँव तीन टोलों में बँटा है। उत्तर दिशा की तरफ का टोला यादवों (अहीरों) का टोला है तो दक्षिण में दलितों का टोला (चमरटोली)। इन दोनों टोलों के ठीक बीच में कायस्थों के तीन परिवार थे। ये तीनों घर एक ही कायस्थ पूर्वज से संबद्ध कालांतर में तीन टुकड़ों में विभक्त होकर वहीं रह रहे हैं।

इन्हीं कायस्थ परिवारों में से एक परिवार था सीताराम वर्मा व अनन्ती देवी का। इन्हीं के पुत्र के रूप में 1 जुलाई 1925 को अमरकान्त का जन्म हुआ। अमरकान्त का नाम श्रीराम रखा गया। इनके खानदान में लोग अपने नाम के साथ 'लाल' लगाते थे। अतः अमरकान्त का भी नाम 'श्रीराम लाल' हो गया। बचपन में ही किसी साधू–महात्मा द्वारा अमरकान्त का एक और नाम रखा गया था। वह नाम था–'अमरनाथ'। यह नाम अधिक प्रचलित तो ना हो सका, किंतु स्वयं श्रीराम लाल को इस नाम के प्रति आसक्ति हो गयी। इसलिए उन्होंने कुछ परिवर्तन करके अपना नाम 'अमरकान्त' रख लिया। उनकी साहित्यिक कृतियाँ इसी नाम से प्रसिद्ध हुई।

अमरकान्त जी ने तो 'लाल' या 'वर्मा' अथवा किसी जाति सूचक 'सरनेम' से मुक्ति पाने के लिए अपना नाम 'अमरकान्त' रख लिया। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि मेरे

दो नाम रखे गए थे, जिनमें एक 'अमरनाथ' भी था, जिसे एक साधू ने दिया था। यह नाम प्रचलित तो नहीं था, लेकिन मैंने इसमें हल्का संशोधन करके साहित्यिक नाम के रूप में इसे मान्यता दिला दी।[1]

बचपन की यादों का जिक्र करते हुए अमरकान्त ने अपने कई लेखों में अनेकानेक घटनाओं का सविस्तार वर्णन किया है। ऐसी ही एक घटना है उनके कर्णछेदन संस्कार से संबंधित। इस घटना का वर्णन करते हुए अमरकान्त स्वयं लिखते हैं कि, ''कान छेदने के लिए एक बारिन आई थी, जिसके पास कपड़े के थैले में कुछ जरूरी सामान थे। वह किसी दूसरे कमरे में बैठी थी, इसलिए मैं देख नहीं सका कि वहाँ कौन–सी तैयारी चल रहीं है। लेकिन कुछ फुसफुसाहटों–भुनभुनाहटों तथा संकेतों से मैं कुछ भाँप तो गया ही था। मैं जब मन–ही–मन डरा हुआ था, उसी समय मेरे दोनों हाथों में एक–एक लड्डू खाने के लिए दे दिया गया। दोनों हाथों में लड्डू क्यो ? इसलिए कि जब कार्रवाई हो तो मैं हाथ चलाकर कोई व्यवधान पैदा न कर सकूँ। काम निर्बाध हो भी गया, क्योंकि जब मैं उनकी चाल में आकर लड्डू खाने लगा तो बारिन ने चुपके–से पीछे–से आकर ताँबे के एक–पतले तार से मेरे दोनों कान, एक–के–बाद–एक छेद ही दिए। मैं रोया तो जरुर, लेकिन दादी के पुचकारने से कुछ कर न सका।[2]

इस तरह के कई अन्य प्रसंग भी हैं जिनका अमरकान्त ने बड़े ही रुचिपूर्वक वर्णन किया है। अमरकान्त का जन्म साधारण कायस्थ परिवार में हुआ था और सभी परंपरागत संस्कारों के साथ–साथ साहित्य व लेखन का संस्कार अमरकान्त ने स्वयं अर्जित किया। उनके घर में किसी तरह का कोई साहित्यिक वातावरण नहीं था।

---

1 मेरा बचपन कब समाप्त हुआ : अमरकान्त, अन्यथा पत्रिका, नवम्बर 2005, अंक 5, पृष्ठ क्र. 94

2 मेरा बचपन कब समाप्त हुआ : अमरकान्त, अन्यथा पत्रिका, नवम्बर 2005, अंक 5, पृष्ठ क्र. 95

पुस्तकों को पढ़ते–पढ़ते उन्होंने अनुभव किया की वे लिख सकते हैं और उन्होनें लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया।

2. परिवार

अमरकान्त जी के परिवार के लोग मध्यम कोटि के काश्तकार थे। आपके बाबा–गोपाल लाल जी–मुहर्रिर थे। आपके पिताजी–सीताराम वर्मा ने इलाहाबाद में रहकर पढ़ाई की थी। यहीं की कायस्थ पाठशाला से उन्होंने एफ.ए. (आज का इन्टरमीडिएट) किया। फिर उन्होंने मुख्तारी की परीक्षा पास की और बलिया कचहरी में प्रैक्टिस करने लगे थे। आप के पूर्वज जौनपुर के किसी नवाब के सिपहसालार थे। लेकिन किन परिस्थितियों में उन्हें भगमलपुर आकर बसना पड़ा इस संबंध में स्वयं अमरकान्त जी को भी कुछ ज्ञात नहीं।

अमरकान्त जी के पिताजी का सनातन धर्म में गहरा विश्वास था, किन्तु वे कर्मकांडो व धार्मिक रुढ़ियों में विश्वास नहीं करते थे। उनके आराध्य देव थे राम और शिव। आपका गला भी बड़ा अच्छा था। संगीत में आपकी रुचि थी। झूठ से आपको घृणा थी। कटु सत्य बोलने में भी आप हिचकते नहीं थे। शराब और जुए के भी आप विरोधी थे। आपने परिवार के प्रति अपने दायित्वों को अच्छी तरह से निभाया। सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवायी। जीवन भर आप बहुत सक्रिय रहे। आप 80 से कुछ अधिक वर्ष तक जीवित रहे।

अमरकान्त जी के पिताजी उर्दू और फारसी के ज्ञाता थे। उन्हें–हिन्दी का कामचलाऊ ज्ञान था। वे शान–शौकत से रहना पसंद करते थे। अपनी युवा अवस्था में उन्होंने घर पर ही पहलवानों का प्रबंध करके कसरत और कुश्ती में निपुणता हासिल की थी। अपने बच्चों से उन्हें कोई खास उम्मीद नहीं थी, सिवाय इसके कि वे कम से

कम हाई स्कूल पास कर लें और फिर उनकी शादी–विवाह की जिम्मेदारी से भी वे मुक्त हो जायें। और बच्चे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए नौकरी–चाकरी का काम शुरू कर दें। और लड़कियों के संबंध में उनकी राय थी कि लड़कियों की शादी जल्दी करा देना ही श्रेयस्कर होता है।

अपने पिता के संदर्भ में अमरकान्त जी लिखते हैं कि, कि वह बच्चे की तरह रोने लगते और छोटे–से–छोटे बच्चे से क्षमा माँग लेते। फिर उनका एक लम्बा और करुण भाषण भी सुनना पड़ता।

अपने पिता की सच्चाई और ईमानदारी के एक प्रसंग का वर्णन करते हुए अमरकान्त ने लिखा है कि एक बार उनके (अमरकान्त के पिता के) छोटे भाई बाजार के फलवाले के यहाँ से कोई फल चोरी से लेकर घर आ गये थे। यह बात जब अमरकान्त के पिताजी को मालूम पड़ी तो उन्हें बहुत गुस्सा आया। उन्होंने छोटे भाई को हिदायत दी की वे फल वापस देकर आयें। और जब उनके भाई बाजार जाकर फल वापस कर आये तो वे अपने भाई को गले लगाकर खूब रोये।

अमरकान्त का परिवार बड़ा था। आप परिवार में सबसे बड़े थे। अमरकान्त की एक बड़ी बहन थी जो अमरकान्त के बचपन में ही बीमारी से मर गई थी। उनका नाम गायत्री था। अमरकान्त को लेकर परिवार में सात भाई और एक बहन (चौथे नंबर पर) थी जिन्हें पिता सीताराम वर्मा ने योग्य तरीके से पढ़ाया–लिखाया।

भगमलपुर स्थित अमरकान्त का पैतृक मकान मिट्टी का बना हुआ बड़ा मकान था। मकान के अंदर दो आँगन थे। पहला आँगन दूसरे की अपेक्षा बड़ा था। दूसरा आँगन एक तरह से घर का पिछवाड़ा (पीछे का हिस्सा) था। इस पिछवाड़े के हिस्से में एक कुआँ और शौचालय था। घर का यह हिस्सा घर की औरतों की सुविधा के लिए

था। घर के पहले आँगन के चारों तरफ कई कमरे बने हुए थे। कोठिला, पूजाघर, रसोई घर आदि कई कमरे थे। घर से बाहर निकलते समय एक बड़े से दालान से होकर गुजरना पड़ता था। परिवार के सदस्यों की संख्या भी अधिक थी। एक बड़े संयुक्त परिवार के लिए इस तरह के मकान आवश्यक भी हैं। भगमलपुर के संपन्न परिवारों में से अमरकान्त का परिवार भी एक था।

3. शिक्षा–दीक्षा

अपने शिक्षा–संस्कार के बारे में अमरकान्त जी लिखते हैं कि, 'एक दिन मुझसे अक्षराम्भ कराया गया। इसको शिक्षा–संस्कार कहा जा सकता है। अमरकान्त का नगर के प्राइमरी स्कूल में नाम लिखाया गया। इस विद्यालय का भवन छोटा पर पक्का था। उस विद्यालय के हेडमास्टर एक मौलवी जी थे जो हमेशा हाँथ में छड़ी लेकर घूमते थे। यहीं से अमरकान्त की प्रारंभिक शिक्षा आरंभ हुई। लेकिन यह प्रारंभिक शिक्षा भी अमरकान्त के लिए आसान नहीं थी। अपने इन्हीं दिनों की चर्चा करते हुए अमरकान्त ने लिखा है कि, ''आरम्भ में ढेलू बाबा मुझे कंधे पर बिठाकर स्कूल ले जाते और छुट्टी के समय आ भी जाते। लेकिन कुछ समय बाद छुट्टी के समय में अनियमितता भी होने लगी। तब मुझे लड़कों के झुंड के साथ इमली के झंखाड़ वृक्षों तक आना पड़ता। वहाँ 'नगरा' गाँव में जाने के लिए दाहिनी तरफ रास्ता था, जिससे होकर वे सभी चले जाते और मैं अकेला रह जाता। मेरे गाँव का कोई लड़का स्कूल जाता ही न था, इसलिए कोई सहयात्री नहीं होता। सड़क भी एकदम सुनसान थी। मुझे बड़ा डर लगता, खास तरह से उन झंखाड़ वृक्षों से। लड़कों ने ही बताया था कि उन पर भूत रहते हैं और उनके तनों के खोड़लों में अजगर – साँप।[3]

---

[3] आत्मकथ्य : अमरकान्त, अमरकान्त के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़ताल (अमरकान्त वर्ष–1), संपा. रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 12

इन परिस्थितियों में अमरकान्त को अधिक दिनों तक नहीं रहना पड़ा। अमराकांत के स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री महावीर प्रसाद जी थे।

तीसरी कक्षा में अमरकान्त का प्रवेश सन 1933 ई. के जुलाई में, एक प्रवेश–परीक्षा के पश्चात हो पाया था। उन दिनों बलिया शहर में आर्य समाज की अच्छी पकड़ थी। लोगों के बीच आर्य समाज का अच्छा प्रभाव था। आर्य समाज के ही एक पदाधिकारी बाबू जानकी प्रसाद जी के सफल प्रयासों के कारण ही एक 'चलता पुस्तकालय की स्थापना हो पायी थी। इस 'चलता पुस्तकालय के लाइब्रेरियन एक गरीब नवयुवक थे। हर पन्द्रह दिन में दो पुस्तकें वे हर सदस्य के घर पहुँचाते और पढ़ी किताबें वापस ले जाते। अमरकान्त के पिताजी को भी इस चलता पुस्तकालय का सदस्य बनाया गया था। लेकिन वे अपने काम में इतना व्यस्त रहते थे कि उन्हें इन किताबों की तरफ देखने का भी मौका नहीं मिलता था। पर इन किताबों ने अमरकान्त का ध्यान अपनी तरफ खींचा। अमरकान्त की रुचि इन किताबों में बढ़ने लगी। फिर क्या था, वे बड़े चाव से इन किताबों को पढ़ने लगे। रात–रात भर जागकर वो इन किताबों को पढ़ते। घर के लोगों से उन्हें डाँट भी पड़ती। पर वे किसी की बातों पर ध्यान न देकर निरंतर पढ़ते रहते।

पाठ्य–पुस्तकें पढ़ने में अमरकान्त का मन नहीं लगता था। अमरकान्त के घर जो मास्टर साहब पढ़ाने आते थे, वो भी अपने अध्यापन कार्य से अधिक, आत्मप्रशंसा व गप्पबाजी किया करते थे। इस कारण भी शायद अमरकान्त पाठ्या पुस्तकों की ओर आकर्षित नहीं हो पाये। 'चलता पुस्तकालय' से आने वाली पुस्तकों में कहानियाँ, उपन्यास, हास्य–व्यंग्य की रचनाएँ, योगाभ्यास तथा धार्मिक और ऐतिहासिक किताबें हुआ करती थीं।

उन दिनों बलिया शहर में बिजली की व्यवस्था नहीं थी। लालटेन व ढिबरी के

रोशनी के सहारे अमरकान्त रात–रात भर इन किताबों को पढ़ते रहते थे। यह भी एक कारण था जिसकी वजह से अमरकान्त पत्रकारिता की तरफ मुड़े। अमरकान्त के चाचा उन दिनों आगरा में रहते थे। उन्हीं के प्रयास से दैनिक 'सैनिक' में अमरकान्त को नौकरी मिल गयी।

इस तरह अमरकान्त के शिक्षा ग्रहण करने का क्रम समाप्त हुआ और नौकरी का क्रम प्रारंभ हुआ।

4. रहन–सहन और स्वभाव

अमरकान्त के पिता अपने गाँव के गिने–चुने संपन्न लोगों में से एक थे। ठाट–बाट से रहना उन्हें पसंद था। गाँव का पैतृक निवास कच्चा पर बड़ा था। किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। घर में नौकर चाकर भी थे। अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में यह परिवार पूरी तरह सक्षम था।

अमरकान्त बचपन में घर के अंदर अलग तरह का व्यवहार करते और घर के बाहर अलग। इस तरह 'घर के अंदर' और 'घर के बाहर' अमरकान्त के दो रूप थे। घर के बाहर वे बेहद शर्मीले व चुप्पे किस्म के बालक थे। लेकिन घर के अंदर की स्थिति बिलकुल अलग थी। उन्हें बचपन में अपने छोटे भाइयों की नाक पकड़कर मलते हुए उसे लाल कर देने में बड़ा मजा आता था। घर के नौकर छबीला को लंगी लगाकर गिराने में भी अमरकान्त पीछे नहीं रहते थे। उन्हें खेल–कूद का भी बड़ा शौक था। हॉकी–फुटबाल, गुल्ली – डंडा, चिक्का – कबड्डी आदि कई खेलों में वो भाग लेते थे। अमरकान्त को बचपन में लड़कियों के साथ खेलना बड़ा अच्छा लगता था, पर कई बार लड़कियाँ उन्हे चिढ़ाकर भगा देती थीं।

अमरकान्त बचपन से ही बड़े संवेदनशील रहे। अपनी बड़ी बहन गायत्री की

अर्थी को नम आँखों से चुपचाप मन मारकर अमरकान्त देखते रहे थे। मानो जैसे उन्होंने अपनी छोटी सी उम्र में ही जीवन व मृत्यु के सत्य को समझने की कोशिश कर रहे हों। बीमार बहन के जिंदा रहने पर उसे चुपके से अचार खाने को देते थे।

अमरकान्त से किसी का दुख देखा नहीं जाता था। आपस में झगड़ा व मनमुटाव उन्हें बिलकुल पसंद नहीं था। बचपन में अमरकान्त को मजदूरों की स्थिति को देखकर बड़ा दुख होता था। मजदूरों के पहनावे, उनके दुबले–पतले शरीर और दिन भर की जी तोड़ मेहनत के बाद भी मजदूरों का एक आना भी न कमा पाने वाली स्थितियों को देखकर अमरकान्त को बड़ा दुख होता था।

अमरकान्त ने लिखा भी है कि उनका मन सबसे अधिक उस समय लगता जब दिन भर जी तोड़ मेहनत करके मजदूर शाम को हिसाब–किताब के लिए इकट्ठा होते। उनके शरीर पर जो कपड़ा होता, उसकी हालत देखकर उसे 'चिरकुट–चिथड़ा' से जादा कुछ भी नहीं कहा जा सकता था। मजदूरों के दुबले–पतले शरीर, चेहरे पर गाल अंदर की तरफ धँसे हुए, चेहरे की हड्डियाँ बाहर की तरफ निकली हुई होती थी। अमरकान्त उस समय तक कुछ–कुछ गिनती और पहाड़ा सीख चुके थे। उन दिनों मजदूरों को उनकी मजदूरी कौड़ियों के रूप में प्रदान की जाती थी। पाई छोटा सा ताँबे का सिक्का होता था, जिसे 'दोकड़ा' भी कहते थे। बारह पाई के बराबर एक 'आना' होता व सोलह आनों का एक 'रुपया'। पर लेखक को ऐसा कोई दिन याद नहीं जब कोई मजदूर दिन–भर की मेहनत के बाद एक रुपया भी कमा पाता हो। मजदूरों की इस तरह की हालत देखकर अमरकान्त उदास हो जाया करते थे।

घर के अंदर अमरकान्त एक आज्ञाकारी बालक थे। अपने से बड़ों की हर आज्ञा का वे पालन किया करते थे। किताबें बड़े चाव से पढ़ते थे। अपने आस–पास के वातावरण के प्रति हमेशा ही सजग रहते। बचपन से शरतचन्द्र के उपन्यासों से प्रभावित

होकर कोरी भावुकतापूर्ण एवं प्रेम प्रसंग वाली कहानियों से अमरकान्त जी ने अपना लेखनी का कार्य शुरू किया।

दसवी उत्तीर्ण करने के उपरान्त अमरकान्त ने अपने कुछ मित्रों के माध्यम से कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संपर्क में आये। उन दिनों इन पार्टियों की कक्षाएँ चलती थीं। यहीं से अमरकान्त को कई छोटी–छोटी पुस्तकें पढ़ने को मिली। स्वतंत्रता, समाजवाद, समाजवादी देश सोवियत रूस, वैज्ञानिक समाजवाद, आचार्य नरेन्द्र देव और राहुल जी के विचारों एवम् साहित्य से अमरकान्त का परिचय हुआ। गांधी और नेहरू जी की आत्मकथाएँ अमरकान्त ने पढ़ी। नेहरू जी भी समाजवादी हैं, अपने अध्ययन के द्वारा जब अमरकान्त को यह पता चला तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हुआ।

अब अमरकान्त खद्दर पहनने लगे थे। गाँधीजी की कई बातें अमरकान्त को पसंद नहीं आती थी। जयप्रकाश नारायण के प्रति भी अमरकान्त के मन में श्रद्धा थी। उनकी बातें व साहित्य अमरकान्त को रोमांचित कर देते थे। अमरकान्त जयप्रकाश नारायण की पार्टी के सदस्य थे अतः पार्टी के सर्वोच्च नेता के प्रति सम्मान स्वाभाविक भी था।

गांधी जी का अमरकान्त पर बहुत तगड़ा प्रभाव था। वे अपने आपको पूरी तरह पवित्र रखना चाहते थे, ठीक गांधीजी की तरह। पर इन सब प्रयासों में उन्होंने न जाने कितनी बार सुसाइड करने का निश्चय किया। इन हताश व निराशा वाले समय के कारण ही अमरकान्त ने डायरी में लिखना प्रारम्भ किया। दिन भर जो भी उनके साथ होता वे उसे डायरी में लिखने लगे। निश्चय तो था ब्रिटिश सरकार से लड़ने का। लेकिन इन दिनों अमरकान्त अपने आप से ही लड़ रहे थे। अपने आप को पूरी तरह अनुपयोगी समझ रहे थे। अपने प्रति हीन भावनाओं से भरे हुए थे। सन 1946 में जब यह तँय हो गया कि भारत को स्वतंत्रता मिल जायेगी तब उन्होंने अपनी पढ़ाई पुनः

प्रारंभ की। इन्टर किया और अपने विवाह की भी स्वीकृति प्रदान कर दी। आजादी तो हमें मिली पर वह जिस रूप में मिली उसने कई लोगों को निराश किया। विभाजन और विभाजन के परिणामस्वरूप जिस कत्ले आम का दौर पूरे देश में चला उसने अमरकान्त को अंदर तक झकझोर के रख दिया।

इसके बाद जब अमरकान्त ने देखा की आजादी के बाद लोग गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं तो उन्हें और कष्ट हुआ। भाषावाद, क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद, जातिवाद, अलगाववाद, फिरकापरस्ती, काला बाजारी, गुटबाजी और भ्रष्टाचार जैसी बातों ने अमरकान्त को निराश किया। उनके सामने से रोमांटिसिज्म के रंगीन पर्दे हटने लगे और अमरकान्त का लेखन यथार्थ की तरफ मुड़कर अधिक पैना होने लगा।

अमरकान्त का रचनात्मक जीवन अपनी पूरी गंभीरता के साथ प्रारंभ हुआ। जिन साहित्यकारों को अब तक वे पढ़ते थे या अपने कल्पना लोक में देखते थे उन्ही के बीच स्वयं को पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए। पत्र–पत्रिकाओं में नौकरी का क्रम भी प्रारंभ हो गया था। लेकिन सन 1954 में अमरकान्त हृदय रोग के कारण बीमार पड़े और नौकरी छोड़कर लखनऊ चले गये। एक बार फिर निराशा ने उन्हें घेर लिया। अब उन्हें अपने जीवन से कोई उम्मीद नहीं रही। पर लिखने की आग कहीं न कहीं अंदर दबी हुई थी अतः उन्होनें लिखना प्रारंभ किया और उन्होंने यह कार्य जीवन पर्यन्त जारी रखा।

अमरकान्त को लेखन के द्वारा जीवन का एक सार्थक आधार मिल गया। अमरकान्त अपने बारे में खुद ही कहते हैं कि, ''..... उनकी आदत, उनका साहस और उनकी विलक्षण प्रतिभा। उसके जीवन को एक सार्थक आधार मिल गया था।[4]

---

[4] देश के लोग और वह : अमरकान्त (अमरकान्त वर्ष–1), संपा. रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 34.

शोधकर्ता द्वारा अपना शोध कार्य करते हुये अमरकान्त जी के बारे में कई नई बातें ज्ञात हुई। जैसे की 'बहाव' नामक पत्रिका का अमरकान्त के संपादकत्व में निकलना। पहला अंक निकल चुका था और अमरकान्त अपने छोटे पुत्र अरविंद के साथ मिलकर दूसरे अंक को निकालने की तैयारी में थे। अमरकान्त एक नाटक भी लिखना चाह रहे हैं। एक और पुस्तक 'खबर का सूरज आकाश में' पर भी उनका कार्य जारी था। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के लिए भी अमरकान्त नियमित रूप से लिखते रहते थे। अभी वे बहुत कुछ लिखना चाहते थें, किंतु अब उनका स्वास्थ उनका साथ नहीं दे रहा था।

5. सेवा कार्य

प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद अमरकान्त ने निश्चय कर लिया था कि उन्हें हिंदी साहित्य की सेवा करनी है। मन में पत्रकार बनने की इच्छा थी। और उन्होनें आगरा शहर से निकलने वाले दैनिक पत्र 'सैनिक' से अपनी नौकरी की शुरूआत की। 'सैनिक' के संपादकीय विभाग में अमरकान्त को काम मिला था।

अमरकान्त यहाँ के भी प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े और ओमप्रकाश, मार्कण्डेय, कमलेश्वर व दुष्यंत कुमार जैसे लेखको के संपर्क में आये। पर यहाँ अमरकान्त सुख से नहीं रह पाये। आर्थिक समस्या बड़ी थी। वे बहुत ही अल्प वेतन पर काम कर रहे थे। उनके प्रेस में आर्थिक लड़ाई शुरू हो गई थी। उन्हें कई तरह से अपमानित भी किया गया। अमरकान्त का जीवन कष्ट में कट रहा था।

सन 1954 में वे गंभीर रूप से बिमार पड़े। वे हृदय रोग के शिकार हो गये थे। जीवन में निराशा का नया दौर शुरू हुआ। नौकरी छोड़कर वे लखनऊ चले गए। अमरकान्त अपने जीवन को निरर्थक मानने लगे थे।

6. संघर्ष

अमरकान्त ने बी.ए. करने के बाद पत्रकार के रूप में अपनी नौकरी की शुरूआत की। किंतु इससे उनकी आर्थिक दशा में सुधार न हुआ। अमरकान्त का समय साहित्यिक की विशेष चिंता भी नहीं थी।

अमरकान्त के जीवन संघर्ष को आसानी से समझा जा सकता है। अमरकान्त ने अपने भीतर एक तरह का आत्म अनुशासन विकसित कर लिया था। शायद यही वह प्रेरक शक्ति थी जिसका जिक्र शेखर जोशी जी करते हैं। अमरकान्त का यही आत्मअनुशासन उनकी रचनाओं में भी दिखायी देता है। आर्थिक तंगी और बीमारी के बीच अमरकान्त ने लेखन को अपने जीवन का आधार बनाया। जितना हो सके उतना लिखने का उन्होंने निश्चय कर लिया।

परिवार की जिम्मेदारियों के प्रति वे सचेत थे। अपनी क्षमताओं से बढ़कर उन्होंने करने का हमेशा की प्रयत्न किया। एक सामान्य मध्यम वर्ग का जीवन जीते हुए अमरकान्त ने स्वतंत्र लेखक के रूप में अपना कार्य जारी रखा। 'सैनिक' और 'अमृत पत्रिका' के अतिरिक्त अमरकान्त दैनिक भारत और कहानी मासिक से भी जुड़े थे। 'मनोरमा' पाक्षिक का संपादन कार्य भी अमरकान्त ने किया। अमरकान्त खुद भी एक पत्रिका निकालना चाहते थे पर सबसे बड़ी समस्या आर्थिक ही थी। पर साधनों की समस्या ने उनकी साधना में खलल नहीं पड़ने दिया। उन्होने 'बहाव' नामक पत्रिका का संपादन कार्य प्रारंभ किया। यह पत्रिका 'अमर कृतित्व' प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होती थी। अमरकान्त के छोटे पुत्र 'अरविंद' इस प्रकाशन कार्य में मुख्य सहायक थे। अरविंद जी खुद एक कहानीकार भी हैं।अ अमरकान्त का जीवन संघर्षों से भरा रहा। और यही संघर्ष उनके साहित्य को अधिक पैना करता रहा।

7. व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ

किसी के भी व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार, परिवेश और शिक्षा आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कथाकार अमरकान्त का पारिवारिक वातावरण साहित्यिक नहीं था। फिर भी साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बहुत सारी बातें विरासत में अमरकान्त को परिवार से ही मिली। 'जरि गइले एड़ी कपार' नामक लेख में शेखर जोशी ने इसी बात की चर्चा करते हुए लिखा है कि, ''किस्सागोई और व्यंग्य का ऐसा अनोखा वातावरण अमरकान्त को अपने परिवार से विरासत में मिला है।[5] अमरकान्त को अपनी कई कहानियों की प्रेरणा परिवार के सदस्यों के द्वारा ही प्राप्त हुई है।

अपनी इन्हीं कुछ कहानियों के बारे में अमरकान्त स्वयं कहते हैं कि, ''..... रजुआ – वो करेक्टर है उसमें। बलिया में ही देखा था उसे हमने। हमारे वाले मुहल्ले का ही था वह। करीब दस एक दिन लगे होंगे–कम्पलीट हो गयी। इसके पूरा होते ही दूसरी लठा ली। एक दिन की भी देर नहीं की। ये भी हमारे परिवार की थी। भाई लॉ करके बलिया आ गये थे। बलिया जैसे छोटे शहर में रहकर उनका बिना सुविधा, अपने बूते आई.ए.एस. में बैठना। सिम्पिली सिटी के मास्टर थे वे। .....उत्साह, पिता की आशाएँ, प्रतीक्षा .....आप शडिप्टी कलक्टरी में देख सकते हैं....।[6]

अमरकान्त के व्यक्तित्व की महत्वपूर्ण बात थी 'ईमानदारी'। अमरकान्त ने हमेशा अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ किया। वे कई पत्र–पत्रिकाओं के संपादन कार्य से जुड़े रहे। इसके बावजूद वे 'अवसरवादी' नहीं बने।

अमरकान्त अपने अंदर एक सीमा के निर्धारण के साथ जीते रहे। कठिन से

---

[5] कुछ यादें कुछ बातें : अमरकान्त (अमरकान्त वर्ष–1), पृष्ठ क्रमांक 38

[6] 'विचारधारा लेखन का पर्याय नहीं है, – साक्षात्कार, कथादेश मार्च 2006, पृष्ठ क्रमांक 17

कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने स्वयं भी कभी उस सीमा का उल्लंघन नहीं किया। अमरकान्त बाहर से जितने सुलझे व सहज लगते हैं वास्तव में अंदर से वे उतने ही उलझे और परेशान रहते। कारण यह था कि वे अपनी परेशानियों को अपने तक रखना पसंद करते थे और बाहर उसकी छाया भी नहीं पड़ने देना चाहते थे। पर यह प्रायः हो नहीं पाता। उनके मित्र उनकी परिस्थितियों से अच्छी तरह परिचित थे। लेकिन वे यह भी जानते थे कि यह आदमी मर्यादाओं में रहनेवाला है। अपने लाभ के लिए अमरकान्त दूसरे का नुकसान नहीं कर सकते थे।

'अमरकान्त सदैव ही एक संकोची व्यक्ति रहे। आम जनता से जुड़ी हुई कोई भी बात उन्हें साधारण नहीं लगती थी। देश में होने वाली हर महत्वपूर्ण घटना पर उनकी बारीक नजर रहती थी। वे खुद यह कभी भी पसंद नहीं करते थे कि वे चर्चा के केन्द्र में रहें। इन सब बातों में उन्हें एक अलग तरह का संकोच होता था। सामान्य जनता, उससे जुड़ी हुई परेशानियाँ, जीवन और साहित्य इन सब में अमरकान्त की गहरी संसक्ति थी। अमरकान्त न केवल एक अच्छे साहित्यकार थें बल्कि उतने ही अच्छे व्यक्ति भी थे उनका व्यक्तित्व बिना किसी बनावट के एकदम साफ और सहज था।

अमरकान्त के कथासाहित्य से कई प्रसंगों को उठाकर के राजेन्द्र यादव ने अपनी इस बात की पुष्टि भी की है। अमरकान्त जब किसी व्यक्ति की आँखों में आँखे डालकर देखते थे तो उसके अंदर बाहर का सारा नाटक समझ जाते थे। इसपर भी वे चुप रहना ही ज्यादा पसंद करते थे। शायद यही उनकी वह शक्ति तथा मारक क्षमता थी जिसको राजेन्द्र यादव स्पष्ट करते हैं।

8. पुरस्कार एवम् सम्मान

अमरकान्त को अपने जीवन में जो भी मुख्य पुरस्कार तथा सम्मान मिले, वे

निम्नलिखित हैं।

- सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार
- उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार
- मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार
- यशपाल पुरस्कार
- जन–संस्कृति सम्मान
- मध्यप्रदेश का 'अमरकान्त कीर्ति' सम्मान
- इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग का सम्मान
- साहित्य अकादमी सम्मान २००७ (इन्ही हथियारों से के लिए)
- व्यास सम्मान २०१० (इन्ही हथियारों के लिए)

इन सभी पुरस्कारों में अमरकान्त सोवियतलैंड नेहरू पुरस्कार से जुड़ी बातों को याद करते हुए बताते हैं कि यह पुरस्कार उन्हें सन् 1984..... में मिला। संयोग की बात है कि जिस दिन इंदिरा गांधी की हत्या हुई उसी दिन शाम को तार के माध्यम से इस पुरस्कार की सूचना अमरकान्त को प्राप्त हुई। इस पुरस्कार में 15 दिन की सोवियत यात्रा भी शामिल थी।

अगले वर्ष सन 1985..... की जुलाई में अमरकान्त 15 दिन की सोवियत यात्रा पर भी गये। वहाँ पर उन्होंने मास्को सहित कई अन्य प्रमुख शहरों की यात्रा की। लेकिन वहाँ से लौटने के बाद अमरकान्त गंभीर रूप से बीमार पड़ गये। विदेश यात्राओं के कई अन्य अवसर उनके पास आये मगर स्वास्थ के कारणों से वे कहीं जा ना सके।

भारत वर्ष के बहुत सारे विश्वविद्यालयों के पाठ्याक्रम में अमरकान्त का साहित्य शामिल किया गया है। देशभर से निकलने वाले हिंदी की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में

अमरकान्त का साहित्य छपता रहा है। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अमरकान्त ने वह दूरी बनायी जहाँ ईनाम एवं सम्मान अमरकान्त की प्रतिष्ठा नहीं बढ़ाते, अपितु अमरकान्त से जुड़कर स्वयं सम्मानित हुए हैं।

(ख) अमरकान्त का कृतित्व

1. कविता प्रेम

अमरकान्त जब बलिया के गवर्नमेंट स्कूल में पढ़ते हुये भी अपने साथ के विद्यार्थियों को साहित्यिक गतिविधियों में रूचि लेने के लिए प्रेरित करते रहते थे। अमरकान्त अपने दोस्त गणेश प्रसाद जी से बहुत अधिक प्रभाव में रहते थे। उन्हीं के आदर्शों पर चलकर अमरकान्त व मित्रों ने कहानियाँ लिखनी शुरू की, हस्तलिखित पत्रिकाएँ निकाली और अन्ताक्षरी टीम में शामिल हुए। विद्यार्थी कविताओं को याद करें इसलिए गणेश प्रसाद जी खुद भी मेहनत करते थे।

अमरकान्त ने इन्हीं दिनों से कविताएँ याद करनी शुरू की। उन दिनों आजादी का नशा पूरे भारत पर छाया हुआ था। हर भारतवासी गुलामी की जंजीरों को तोड़कर आजाद भारत में साँस लेना चाहता था। अमरकान्त भी ऐसे ही आजादी के मतवाले थे। देश प्रेम से भरी कविताएँ गाने से उन्हें एक तरह की आंतरकि शक्ति मिलती थी।

जैसा की हम पहले उल्लेख कर चुके हैं। बी.ए. पास करने के बाद अमरकान्त ने नौकरी करने का निश्चय किया। नौकरी का यह क्रम सन् 1948 से आगरा से शुरू हुआ। उन्होंने आगरा से निकलने वाले 'सैनिक' दैनिक पत्र के संपादकीय विभाग में नौकरी शुरू की। यहीं पर उनकी मुलाकात विश्वनाथ भटेले जी से हुई। भटेले जी ही उन्हें प्रगतिशील लेखक संघ की मीटिंग में ले गये। यहीं पर अमरकान्त की मुलाकात डॉ. रामविलास शर्मा जी जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों से हुई।

प्रगतिशील लेखक संघ की मीटिंग में अमरकान्त का परिचय अच्छे गजल गायक के रूप में कराया गया। अमरकान्त इससे खुश नहीं थे। वास्तव में उन्हें गजल व कविताएँ पसंद थी, वे उसे अकेले में या दोस्तों के आग्रह पर सुना भी देते थे पर उन्होंने स्वयं कोई कविता या गजल लिखकर कभी कोई प्रतिष्ठा पाने की कोशिश नहीं की थी। उर्दू के कुछ मित्रों का संग–साथ, अंताक्षरी टीम का सदस्य व कविताओं गजलों में रूचि के कारण उन्हें बहुत सारी पंक्तियाँ याद जरूर हो गयीं थी पर इन सब के कारण वे अपने आप को कवि मानने के लिए तैयार नहीं थे।

पर डॉ. रामविलास शर्मा जी जैसे वरिष्ठ साहित्यकार का आग्रह वे ठुकरा नहीं सकते थे। पर अब ये हर बार का किस्सा हो गया था। इससे छुटकारा पाने के लिए अमरकान्त ने कहानी लिखने का निश्चय किया। अगली मीटिंग में इसके पहले कि कोई गजल या कविता सुनाने के लिए कहे, उन्होंने खुद यह घोषणा कर दी कि वे कहानी सुनायेंगे।

इस तरह उन्होंने 'इंटरव्यू नामक अपनी पहली कहानी लिखी और आगरा के प्रगतिशील लेखक संघ की मीटिंग में उसे डॉ. रामविलास शर्मा एवम् अन्य सदस्यों को सुनाया। सभी लोगों ने यह कहानी सुनकर उसकी भरपूर प्रशंसा की। इस कहानी ने अमरकान्त को एक नई पहचान दी। अब वे कहानीकार के रूप में पहचाने जाने लगे। अब उनसे कोई कविता या गजल सुनाने का आग्रह नहीं करता था। अमरकान्त अपनी नई पहचान से खुश थे।

कविताएँ व गजल उन्हें अभी भी पसंद हैं। वे कई कंठस्थ कविताएँ गुनगुनाना भी पसंद करते हैं। पर वे स्वयं कविता नहीं लिखते। इसलिए खुद को कवि कहलवाना भी पसंद नहीं करते।

2. साहित्यिक वातावरण

यह संकेत दिया जा चुका है कि अमरकान्त के घर में कोई साहित्यिक वातावरण नहीं था। स्कूल के अध्यापक श्री गणेश प्रसाद जी ने जरूर लिखने के लिए अमरकान्त को प्रेरित किया। बी.ए. अमरकान्त ने इलाहाबाद के हिन्दू बोर्डिंग हाऊस में रहकर पूरा किया। उन दिनों डॉ. रघुवंश भी वही छात्रावास में रहकर शोध कर रहे थे। पर इस समय तक अमरकान्त हिन्दी साहित्य जगत से परिचित नहीं थे। अमरकान्त का विषय भी हिन्दी नहीं था।

स्कूल के दिनों के ही कई मित्र अमरकान्त को फिर हिन्दू बोर्डिंग हाऊस में मिले। इन्हीं मित्रों के साथ मिलकर अमरकान्त ने फिर एक हस्तलिखित पत्रिका निकाली। इस तरह की एक–दो और पत्रिकाएँ अमरकान्त व मित्रगण अपने प्रिय अध्यापक श्री गणेश प्रसाद जी की प्रेरणा से पहले भी निकाल चुके थे।

औपचारिक रूप से हिंदी भाषा अथवा साहित्य अध्ययन का विषय न होने पर भी साहित्य में अमरकान्त की गहरी रूचि थी। माध्यमिक कक्षा में उनके प्रेरणा पुरूष गणेश प्रसाद ने साहित्य निष्ठा का जो बीजारोपण किया था वह सदैव ही सचेतन व सक्रिय बना रहा। इसलिए इलाहाबाद के हिंदू हॉस्टल में जब पुराने मित्रों का साहचर्य मिला तो उन्होंने पत्रिकाएँ निकालकर अपनी साहित्यिक अभिरूचि का परिचय दिया।

आगरा के प्रगतिशील लेखक संघ में कविताओं, गीतों व गजलों का आकर्षक पाठ भी उनके साहित्यिक संस्कार का ही अंग था। यह बीजांकुर उनके साहित्यिक होता गया और 'इंटरव्यू' नामक कहानी के रूप में उसका सुफल सामने आया। ध्यातव्य है कि उनकी पहली ही कहानी 'इंटरव्यू' डॉ. रामविलास शर्मा जैसे दिग्गज समीक्षकों द्वारा प्रशंसित हुई। यहीं से अमरकान्त के सशक्त रचनाकार का स्वरूप स्पष्ट होता है।

तीन साल आगरा रहने के बाद अमरकान्त वापस इलाहाबाद आ गये। यहाँ पर अमरकान्त की पहचान भैरव प्रसाद गुप्त जी जैसे साहित्यकारों से हुई। यहाँ 'परिमल' और 'प्रगतिशीलों' की आपसी नोक–झोक से अमरकान्त अवगत हुए। मार्कण्डेय व शेखर जोशी जैसे मित्र अमरकान्त को यहीं पर मिले। इलाहाबाद के साहित्यिक परिवेश से अमरकान्त अच्छी तरह जुड़ गये थे। शमशेर, अमृतराय, श्रीकृष्णदास, नेमिचन्द्र जैन, पहाड़ी और डॉ. एजाज हुसेन जैसे अनेक उर्दू व हिन्दी के लेखकों से परिचित होने का अवसर मिला। इलाहाबाद के बारे में स्वयं अमरकान्त लिखते हैं कि, ''धर्म, राजनीति, शिक्षा एवं साहित्य का प्रमुख केन्द्र था इलाहाबाद। यहाँ का विश्वविद्यालय देशभर में मशहूर। प्रदेश के सर्वोत्तम लड़के शिक्षा के लिए इलाहाबाद आते थे। लगता था कि हिन्दी के तमाम प्रख्यात लेखक इलाहाबाद में ही रहते हैं। निराला, सुमित्रा नन्दन पंत, महादेवी वर्मा, शमशेर बहादुर सिंह, प्रकाश चन्द्र गुप्त, श्रीपत राय, अमृतराय, भैरव प्रसाद गुप्त, श्री कृष्णदास, नेमीचन्द्र जैन, डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, गंगा प्रसाद पांडेय, नरेश मेहता, पहाड़ी, धर्मवीर भारती, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, लक्ष्मी कान्त वर्मा, लक्ष्मी नारायण लाल तथा अनेक अन्य उभरते युवा लेखक। तब भुवनेश्वर भी विक्षिप्तावस्था में यहीं रहते थे।.....[7]

हृदय रोग के कारण अमरकान्त को इलाहाबाद छोड़ना पड़ा। वे लखनऊ चले आये। यहाँ पर आकर के वे गहरे मानसिक द्वंद्व से लड़ते रहे। वे अपने जीवन से निराश हो गये थे। वहाँ से फिर वे अपने घर आ गये और बेकार बैठे रहे। 'दोपहर का भोजन' कहानी लिखकर अमरकान्त ने अपनी शक्ति को संचित किया।

इन दिनों की याद में अमरकान्त ने 'प्रेमकुमार' जी को दिये एक साक्षात्कार में

---

[7] वसुधा पत्रिका, अंक जुलाई–सितंबर 2005, अमरकान्त से चंद्रकांत पाण्डेय की बातचीत

कहा, ''..... 1954 में मैं बीमार पड़ गया। बी.पी. की शिकायत हुई, फिर हार्ट ट्रबल। शाम की ड्यूटी में अचानक पेन! सॉस लेने में तकलीफ! मित्र ने घर पहुँचाया। उस समय इन बीमारियों के बारे में इतनी जागरूकता नहीं थी। चेक अप नहीं थे, हकीम थे। नौकरी डिसकन्टीन्यू हुई। चीजें कुछ इस तरह बिगड़ती गयी कि ट्रीटमेंट भी गड़बड़ाता रहा। लखनऊ चला गया। मेडिकल कॉलेज में वहाँ जब ठीक से डायग्नोस हुआ, तब ठीक हुआ। अर्ली एज में हुआ यह सब कोई खास एज नहीं थी – उन्तीस वर्ष की उम्र रही होगी। नौकरी छूट ही गयी थी तो फिर बलिया में रहा।[8]

इस तरह अमरकान्त फिर अपने आपको लेखन कार्य की तरफ मोड़ पाये। आर्थिक तंगी को दूर करने के लिए भी उन्होंने लेखन का ही सहारा लिया। अब तक अमरकान्त साहित्य जगत में अच्छी तरह पहचाने जाने लगे थे। स्वास्थ के कारणों से अब दौड़–भाग उनसे संभव नहीं थी। पर वे अपने लेखन के माध्यम से साहित्य जगत से जुड़े रहे।

3. साहित्यिक प्रेरणा स्रोत

यह बताया जा चुका है कि अमरकान्त को बचपन में शरतचन्द्र की रचनाओं ने बेहद प्रभावित किया। अपने पिताजी से उन्होंने बहुत सी बातें सीखी थी। पर घर पे कोई साहित्यिक वातावरण नहीं था। घर पर आनेवाले 'चलता पुस्तकालय' की किताबों को ही पढ़कर अमरकान्त के मन में साहित्य के बीज अंकुरित हुए।

स्कूल में सहपाठी चन्द्रिका व अध्यापक बाबू गणेश प्रसाद के व्यक्तित्व ने भी अमरकान्त को प्रभावित किया। बाबू गणेश प्रसाद की प्रेरणा से अमरकान्त ने अन्य मित्रों

---

[8] देश के लोग और वह : आत्मकथ्य, अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ – खण्ड एक, पृष्ठ क्रमांक 4 और 5

की मदद से 'हस्तलिखित पत्रिका' निकाली। उन दिनों पूरा देश आजादी के लिए तड़प रहा था। छोटे–छोटे बच्चे भी नेहरू व महात्मा गांधी के नाम से परिचित थे। अमरकान्त भी इन नामों से परिचित हो चुके थे। क्रांतिकारियों के बारे में भी उन्होंने सुन रखा था। देश–प्रेम से भरे हुए बहुत से गीत उन्हें कंठस्थ थे। स्थानीय क्रांतिकारियों से मेल–जोल बढ़ने पर उन्हें क्रांति से संबंधित बहुत सी पुस्तकें पढ़ने को मिली। अपने मित्रों के साथ मिलकर अमरकान्त ने कुछ हास्यास्पद क्रांतिकारी कार्य भी किया।

धीरे–धीरे अमरकान्त 'कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की क्लासेस में आने–जाने लगे। यहीं पर अमरकान्त ने आचार्य नरेन्द्र देव व राहुल जी के साहित्य से परिचित हुए। महात्मा गांधी व पंडित जवाहर लाल नेहरू की आत्मकथाओं को पढ़ा। हाईस्कूल पास करने तक अमरकान्त कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के मेम्बर बन गए थे। खद्दर पहनने लगे थे। साथ ही साथ यह समझ गये थे कि सबसे जरूरी है भारत माता की आजादी। और यह आजादी आतंकवाद के रास्ते पर चलने से नहीं मिलेगी अपितु जनता के बीच जाकर उन्हें जागृत करना पड़ेगा। अमरकान्त एक लंबे समय तक यह नहीं तँय कर पाये कि उन्हें जीवन में करना क्या है? वे इसी मानसिक द्वंद्व से जूझते रहे।

बी.ए. करने के बाद जब वे आगरा आये तो यहाँ के 'प्रगतिशील लेखक संघ' से जुड़े। यहीं पर अमरकान्त को एक साहित्यिक पहचान मिली। डॉ. राम विलास शर्मा, राजेन्द्र यादव, राजेन्द्र रघुवंशी, घनश्याम अस्थाना, पद्मसिंह शर्मा कमलेश, रावी व रांगेय राघव जैसे साहित्यकारों से उनकी पहचान हुई। इनमें डॉ. रामविलास शर्मा के व्यक्तित्व ने उन्हें प्रभावित किया। स्वयं अमरकान्त ने लिखा है कि, ''....अगर मैं प्रगतिशील लेखक संघ की मीटिंग में नहीं गया होता और डॉ. रामविलास शर्मा की

प्रेरणा मुझे नहीं मिली होती तो मैं कब तक भटकता रहता।''[9]

आगरा में तीन वर्ष बिताने के बाद अमरकान्त इलाहाबाद आ गये। यहाँ के भी 'प्रगतिशील लेखक संघ' से वे जुड़े। यहाँ के साहित्यिक वातावरण में भैरव प्रसाद गुप्त व शमशेर बहादुर सिंह उन्हें सर्वाधिक प्रभावित किया। मार्कण्डेय व शेखर जोशी अमरकान्त के प्रिय मित्रों में थे। इलाहाबाद में शुरू–शुरू में अमरकान्त सभी के लिए अपरिचित ही थे। श्री प्रकाश चन्द गुप्त एक मात्र व्यक्ति थे जो अमरकान्त को पहले से जानते थे।

इलाहाबाद में ही रहते हुए अमरकान्त हृदय रोग के शिकार हो गये। इसके बाद लखनऊ, आजमगढ़ व बलिया रहे। जीवन के निराशा व अवसाद भरे क्षणों में भी अमरकान्त ने 'लिखते रहने' का संकल्प नहीं छोड़ा। और उनका यह आजीवन जारी रहा।

4. प्रभावित करने वाली विचारधाराएँ

अमरकान्त के बचपन का समय वह समय था जब सारा देश आजादी के लिए तड़प रहा था। क्रांतिकारियों के किस्से हर गली हर मुहल्ले में गीतों के रूप में गाये जाते थे। अध्ययन के लिए सामग्री चोरी–छुपे उपलब्ध होती थी। मन्मथनाथ गुप्त की पुस्तक 'भारत में सशस्त्र क्रांति की चेष्टा', 'चाँद का फाँसी अंक' और ऐसी कई पुस्तकों ने अमरकान्त की जीवन दिशा बदली।

श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी जो कि कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की क्लासेस चलाते थे। उनके विचारों ने अमरकान्त को खूब प्रभावित किया। गांधी जी की सच्चाई अमरकान्त को सबसे अधिक प्रभावित करती थी। अमरकान्त समाजवादी विचारों से जुड़े थे अतः

[9] कुछ यादें कुछ बातें, संस्मरण, लेखक – अमरकान्त, पृष्ठ क्रमांक 25

उन्हें यह बात बहुत खुशी देती थी कि नेहरू जी भी समाजवादी हैं। जयप्रकाश नारायण से भी अमरकान्त प्रभावित थे। डॉ. लोहिया के विचारों को भी वे पसंद करते थे। मार्क्सवाद, समाजवाद, गांधीवाद और ऐसे ही कई अन्य विचारों को साथ लेकर अमरकान्त आगे बढ़ रहे थे। कारण यह था कि उन दिनों जो सबसे बड़ा प्रश्न था वह देश की स्वतंत्रता का था। और सभी तरह के विचार इस महान उद्देश्य से जुड़ ही जाते थे।

अमरकान्त को शरतचन्द्र के लेखन ने भी प्रभावित किया। इसके कारण को स्पष्ट करते हुए अमरकान्त स्वयं लिखते हैं कि, ''एक मध्यमवर्गीय परिवार में जिस लाड़–प्यार से वह पला था, जैसे बँधे, पिछड़े और ग्रामीण समाज में वह रहता था, जैसी कच्ची उम्र और उसका देश जिस कष्ट, पीड़ा, अन्याय और गुलामी के दौर से गुजर रहा था और जैसा वह स्वयं अव्यावहारिक एवं कल्पनाशील था – ऐसी स्थितियों में 'रोमान्टिसिज्म' एक अनिवार्य परिणाम था। ..... ''शरतचन्द्र का रोमांटिसिज्म व्यक्तिवाद, कोरी काल्पनिकता, कलाबाजी और छद्म आधुनिकता पर आधारित नहीं है। उनकी रचनाएँ अपने समय के प्रगतिशील यथार्थ की गहरी समझ के बल पर खड़ी होती है और परिवर्तन की कामना को तीव्रता से व्यक्त करती है।''[10]

अमरकान्त अपने ऊपर प्रेमचन्द और अन्य साहित्यकारों का भी प्रभाव स्वीकार करते हैं। उन दिनों अमरकान्त के पास सभी साहित्य उपलब्ध नहीं होता था। जो पढ़ने को मिलता उन्हीं का प्रभाव भी पड़ना स्वाभाविक था। उन दिनों शरतचन्द्र और रवीन्द्रनाथ टैगोर का साहित्य उनके लिए उपलब्ध था। घर पर आने वाले 'चलता पुस्तकालय' के माध्यम से ही अधिकांश साहित्य उन्हें पढ़ने को मिला था। इन दोनों

---

[10] आत्मकथ्य : अमरकान्त, अमरकान्त वर्ष एक, संपादक – रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया एवम् नरेश सक्सेना, पृष्ठ क्रमांक 24 और 25

की ही कहानियों में रोमांटिक तत्व था जिसने अमरकान्त को प्रभावित किया।

आगे चलकर जब अमरकान्त का परिचय प्रेमचंद, अज्ञेय, जैनेन्द्र, इलाचंद जोशी और विश्वसाहित्य से हुआ तो उनके अंदर एक दूसरे तरह की समझ विकसित हुई। रोमांस और आदर्श का प्रभाव उनके ऊपर से कम होने लगा। वैसे इस रोमांस और आदर्श से दूर होने का एक कारण अमरकान्त विभाजन के दम पर मिली आजादी और उसके बाद हुए भीषण कत्ले आम को भी मानते हैं। अभी तक सभी का उद्देश्य एक ही था और वह था देश की आजादी। लेकिन पद, पैसा और प्रतिष्ठा के लालच में लोग अब विभाजन की बात करने लगे थे। इससे आदर्शो के प्रति जो एक भावात्मक जुड़ाव था उसे गहरा धक्का लगा।

जयप्रकाश नारायण के कांग्रेस पार्टी से अलग होने की बात सुनकर भी अमरकान्त को आघात पहुँचा। गोर्की, मोपासा, टॉलस्टॉय, चेखव, डास्टायवस्की, रोमा रोला, तुर्गनेव, हार्डी, डिकेन्स जैसे लेखकों के साहित्य नें अमरकान्त को प्रभावित किया। बी.ए. करने के बाद अमरकान्त नौकरी करने आगरा चले आये। यहाँ वे प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े और कई साहित्यकारों से परिचित भी हुए।

आगरा के बाद अमरकान्त इलाहाबाद चले आये। यहाँ के भी प्रगतिशील लेखक संघ से जुड़े। इलाहाबाद आने और यहाँ के प्रगतिशील लेखक संघ से जुडने से अमरकान्त के साहित्यिक संस्कार अधिक पुष्ट हुए। लेखकीय आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई। प्रगतिशील लेखक संघ के लेखकों के साथ विार विनिमय का भी उनकी रचनाशीलता पर प्रभाव पड़ा। उनकी ग्रहणशीलता का यह वैशिष्ट्या था कि लेखकों के रचनात्मक गुणों को वे आदरपूर्वक स्वीकार करते थे। यह भी लक्षणीय है कि जहाँ उन्होंने अपने समान धर्माओं से प्रभाव ग्रहण किया वहीं उन्हें प्रभावित भी किया। मोहन राकेश, रांगेय राघव, राजेन्द्र यादव, नामवर सिंह, कमलेश्वर, केदार, राजनाथ पाण्डेय,

मधुरेश, मन्नू भंडारी, मार्कण्डेय, शेखर जोशी, भैरव प्रसाद गुप्त, भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा, श्रीकांत वर्मा, ज्ञान प्रकाश, सुरेन्द्र वर्मा, विजय चौहान और विश्वनाथ भटेले जैसे कई साहित्यकारों ने अगर अपना प्रभाव अमरकान्त पर डाला तो वे भी अमरकान्त के साहित्यिक प्रभाव से बच नहीं पाये। समय–समय पर इन सभी ने अमरकान्त के साहित्य पर अपनी समीक्षात्मक दृष्टि प्रस्तुत की है।

सन् 1954 में बीमार पड़ने के बाद अमरकान्त को कठोर प्रतिबंधों के दौर से गुजरना पड़ा। अब उनका घूमना फिरना कम हो गया किंतु आर्थिक दबाव और परिवार की जिम्मेदारियों से जूझते हुए भी उन्होंने लिखने का क्रम नहीं छोड़ा। उम्र के इस पड़ाव पर भी उनका लेखन कार्य सतत जारी रहा है। नए लोगों को वे पढ़ रहे थे।

अमरकान्त अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक एवम् साहित्यिक परिवेश से हमेशा जुड़े रहे और इन सबका मिला जुला प्रभाव उनके व्यक्तित्व एवम् साहित्य पर पड़ा।

5. कथा लेखन

अमरकान्त के संपूर्ण कथा साहित्य को निम्नलिखित रूपों में बाटा जा सकता है।

1. अमरकान्त के कहानी संग्रह

1. जिंदगी और जोक
2. देश के लोग
3. मौत का नगर
4. मित्र मिलन
5. कुहासा

6. तूफान

7. कला प्रेमी

8. प्रतिनिधि कहानियाँ

इधर अमरकान्त की संपूर्ण कहानियाँ दो भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं। 'जाँच और बच्चे' कहानी संग्रह में उनकी नवीनत रचनाये हैं।

1. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ

खण्ड एक – अमर कृतित्व प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2002)

2. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियाँ

खण्ड दो – अमर कृतित्व प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2002)

3. जाँच और बच्चे

– अमर कृतित्व प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2005)

इस तरह अमरकान्त की संपूर्ण कहानियाँ उपर्युक्त तीन संग्रहों के माध्यम से उपलब्ध हैं। खण्ड एक और दो की कहानियों को उनके रचना कालक्रम के 5 दशकों में विभाजित किया गया है। '1950 का दशक' से लेकर '1990 का दशक' तक। इस तरह इन दोनों खण्डों में अमरकान्त की कुल 82 कहानियाँ संग्रहित हैं। नवीनतम कहानी संग्रह 'जाँच और बच्चे' में 11 कहानियाँ संग्रहित हैं। इस तरह अमरकान्त की कुल 93 कहानियाँ इन तीनों कहानी संग्रहों के माध्यम से उपलब्ध हैं। अब तक अमरकान्त द्वारा लिखित इतनी ही कहानियों का प्रकाशन हुआ है।

2. अमरकान्त का उपन्यास साहित्य

अमरकान्त के प्रकाशित अब तक के कुल उपन्यास निम्नलिखित हैं।

1. सूखा पत्ता – राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 1984)

2. आकाश पक्षी – राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2003)

3. काले उजले दिन – राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2003)

4. कँटीली राह के फूल – राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 1963)

5. ग्राम सेविका – लोकभारती (प्रथम संस्करण 1973)

6. सुखजीवी – संभावना प्रकाशन, हापुड़ (प्रथम संस्करण 1982)

7. बीच की दीवार – अभिव्यक्ति प्रकाशन (1969 में
'दिवार' और 'आंगन' नाम से प्रकाशित)

8. सुन्नर पांडे की पतोह – राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2005)

9. लहरें – अक्टूबर 2005, कादम्बिनी उपहार अंक

10. इन्ही हथियारों से। – राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2003)

इनके अतिरिक्त भी अमरकान्त द्वारा समय–समय पर कुछ अन्य साहित्य भी लिखा जाता रहा। इन सभी को हम 'प्रकीर्ण साहित्य' के अंतर्गत विचार करेंगे। ये रचनाएँ निम्नलिखिति हैं।

3. अमरकान्त का प्रकीर्ण साहित्य

1. कुछ यादें कुछ बातें – संस्मरण

राजकमल प्रकाशन (प्रथम संस्करण 2005)

2. नेउर भाई – बाल साहित्य, प्रकाशक कृतिकार, इलाहाबाद

3. बानर सेना – बाल साहित्य, प्रकाशक कृतिकार, इलाहाबाद

4. खूँटा में दाल है – बाल साहित्य, प्रकाशक कृतिकार, इलाहाबाद

5. सुग्गी चाची का गाँव – बाल साहित्य, प्रकाशक कृतिकार, इलाहाबाद

6. झगरूलाल का फैसला–बाल साहित्य, प्रकाशक कृतिकार, इलाहाबाद

7. एक स्त्री का सफर – बाल साहित्य, प्रकाशक कृतिकार, इलाहाबाद

इस तरह हम देखते हैं कि अमरकान्त ने लगातार अपना लेखन कार्य जारी रखा। सारी कहानियाँ दो खण्डों में आ जाने से उनका अध्ययन सुविधा जनक हो गया है। अमरकान्त के अधिकांश उपन्यास 'राजकमल प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किये गये हैं। इसमें से कुछ उपन्यास अब 'आउट ऑफ प्रिंट' भी हैं। जैसे कि 'ग्राम सेविका' व 'कँटीली राह के फूल'। ये प्रायः दुर्लभ हैं। इनकी संभावना कुछ प्रतिष्ठित ग्रंथालयों में ही की जा सकती है।

बाल साहित्य भी अमरकान्त ने पर्याप्त लिखा है। ये पुस्तकें इलाहाबाद के ही प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गयी हैं। जैसे कि 'कृतिकार'। अमरकान्त द्वारा लिखित अधिकतर बाल साहित्य 'कृतिकार' द्वारा ही प्रकाशित हैं। लेकिन इन पुस्तकों का कोई नियमित संस्करण नहीं निकला, अतः इन सभी को 'आउट ऑफ प्रिंट' की श्रेणी में रखा जा सकता है।

'अमर कृतित्व' प्रकाशन के पास इन पुस्तकों की कुछ प्रतियाँ सुरक्षित रखी गयी हैं। शोध कार्य की दृष्टि से इन पुस्तकों का भी अपना महत्व है। अमरकान्त का संपूर्ण कथा साहित्य बड़ा ही व्यापक है। आर्थिक तंगी और बीमारी के बाद भी अमरकान्त की कलम सत्त चलती रही। यह उनके परिश्रम का ही फल है कि उन्होंने अपने कथा संसार को इतना बृहत् रूप दिया।

साहित्यिक दृष्टि

प्रारंभ में अमरकान्त का जुड़ाव रोमांटिक कहानियों से हुआ। वह समय भी 'रोमांटिक बोध' का था। इन दिनों अमरकान्त शरतचन्द्र से बहुत प्रभावित रहे। ध्यान

देने वाली बात यह भी है कि अमरकान्त बलिया जैसे छोटे कस्बे में रहते थे। घर में चलता पुस्तकालय के माध्यम से जो पुस्तकें उन्हें उपलब्ध होती वही वे पढ़ते थे। विद्यालय की किताबों में प्रेमचंद की कुछ एक कहानियाँ उन्होंने पढ़ी थी। पर विश्व साहित्य से उनका कोई संपर्क नहीं हो पया था। जैसे–जैसे आगे चलकर उनका परिचय विश्व साहित्य से हुआ, वैसे–वैसे उनकी साहित्यिक दृष्टि भी बदलने लगी।

अनेक घटनाओं और इनकी आत्मस्वीकृतियों के साक्ष्य पर हम देख चुके हैं कि जीवन के अनेक उतार–चढाव, आर्थिक संकोच, पारिवारिक दायित्व और स्वास्थ्य का असहयोग बार–बार उनके सामने आया किंतु उनकी रचनाधर्मिता न तो कभी कुंठित हुई और न ही शिथिल। इससे स्पष्ट होता है कि साहित्य लेखन ही उनके जीवन का आत्यंतिक व्रत रहा है।

साहित्य सृजन अमरकान्त के लिए बैठे–ढाले अथवा मनोरंजन का उपक्रम कभी नहीं रहा। वे रचना कर्म को सामाजिक दायित्व और संसक्ति से जोडकर देखते हैं। इसलिए वैयक्तिक अनुभूति अथवा चेतना को रचना के धरातल पर सार्वभौमिक बनाकर ही देखना चाहते हैं। कोई भी विचारधारा यदि वह व्यापक कल्याण के अनुकूल नहीं है तो उनकी दृष्टि में वह रचनाकर्म में बाधक ही होगी। इसलिए वे मानते है कि लेखक की प्रतिबद्धता विचारधारा से नहीं आंतरिक ईमानदारी और मानवीय मूल्यों के साथ होनी चाहिए। उन्होंने बाल साहित्य का भी प्रभूत लेखन किया है। इसका प्रमुख उद्देश्य संस्कार संपन्न और दायित्वयीन पीढ़ी का निर्माण करना है।

राजकीय सम्मान के साथ दी गई अंतिम विदाई

अमरकान्त आज हिन्दी साहित्य की प्रथम पंक्ति के रचनाकारों में अपना गौरवपूर्ण स्थान रखते हैं। सबसे अच्छी बात यह थी कि अमरकान्त अपने मृत्यु से पूर्व तक बिना थके लिखते रहे थे। उनके भीतर गजब का उत्साह था और भी बहुत कुछ साहित्य को देने

की महत्वाकांक्षा थी। लेकिन ईश्वर ने उन्हें अपने पास बुलाने में देरी नहीं की 17 फरवरी, 2014 के दिन को सुबह 9:30 बजे हिन्दी के महान कथाकार अमरकान्त ने जिन्दगी की अंतिम साँसें लीं। वे उस समय 88 वर्ष के थे। ज्ञानपीठ से सम्मानित हिन्दी के अन्य मूर्धन्य साहित्यकारों का प्रगतिशील आन्दोलन से वैसा जीवन भर का सम्बन्ध नहीं रहा जैसा कि अमरकान्त का था। सादगी बड़ी कठिन साधना है। अमरकान्त का व्यक्तित्व और कृतित्व, दोनों ही इसका प्रमाण है। हिन्दी साहित्य का यह सितारा अपना पूरा जीवन पूरे समर्पण के साथ साहित्य को दे गया। हम जब कभी भी कथा–साहित्य की बात करेंगे तो वह चर्चा, अमरकान्त की कहानियों के बगैर कभी पूरी नहीं होगी। अमरकान्त अपनी कहानियों में हमेशा जीवित रहेंगे।

सारांशतः अमरकान्त का संपूर्ण व्यक्तित्व जीवन के कठोर तपा से तपकर कंचन से कुंदन बनता रहा है। उन्होंने अपनी मूल्यनिष्ठा समाज संपृक्ति दायित्व चेतना और मानवीय संवेदना के आधार पर लेखकीय धर्म का निर्वाह किया है और आज भी उसी के प्रति निष्ठावान हैं। अमरकान्त का संपूर्ण साहित्य उनकी इसी समर्पित और संकल्पित मूल्य चेतना का प्रमाण है।

निष्कर्ष–

अमरकान्त ने हिन्दी कहानी और उपन्यास लेखन में जिस सहजता, सरलता, अपनेपन, यथार्थ और लोकतन्त्रात्मक स्वरूप को अपनाया और आगे बढ़ाया, वह हिन्दी साहित्य के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। 'नयी कहानी' आन्दोलन के जरिए आम जन को अपनी कहानी का पात्र बनाने वाले अमरकान्त ने साबित किया कि वास्तव में यही असली भारत है और अमरकान्त के उपन्यास और कहानियाँ उस सुषुप्त ज्वालामुखी सी हैं जो ऊपर से शान्त दिखती है लेकिन अन्दर धधकते लावा को दबाए हुए हैं।